>

Title: Need to carry out extensive excavation work in and around Nalanda University in Bihar in order to collect more information about our history and culture.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा): महोदय, मैं नालंदा संसदीय क्षेत्र से आता हूं। 1915-16 से लेकर लगभग 20 वर्ष तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने यहां खुदाई कराई है। इतने लम्बे काल में इस विभाग ने जो विशद खनन, स्मारकों का संरक्षण और पुरानी वस्तुओं का संग्रह किया, इससे नालन्दा की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई है। यह अलेक्जेंडर कर्निघम ही थे, जिन्होंने संसार के पुरातत्वज्ञों का ध्यान इस स्थान के महत्व की तरफ केंद्रित किया। नालन्दा में पिछले तीन वर्षों में जुआफरडीह, बेगमपुर, दामनखंडा, घोड़ा कटोरा का उत्खनन शाखा टीम, पटना के द्वारा किया गया, जिसमें उत्खनन के पश्चात चौथी शताब्दी का बना हुआ प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय पहले की पुरातत्विक साक्ष्यों की कड़ी जोड़ने का काम जुआफरडीह ने किया है, जिसकी वैज्ञानिक तिथि 1200 से 1300 बीसी के बीच आई है और घोड़ा कटोरा के उत्खनन में ताम्र पाषाणिक संस्कृति से ले कर पाल काल तक के रहने के निरन्तर साक्ष्य मिले हैं। प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की अंशतः उत्खनन होने से हमारे इतिहास और संस्कृति की पूरी जानकारी अभी तक नहीं मिली है।

ऐतिहासिक दस्तावेजों और चीनी यात्रियों फाहियान और ह्वेनसांग के यात्रा वृतान्त से जो साक्ष्य मिले हैं, उनकी पुष्टि आधे अधूरे उत्खनन कार्य को पूरा करके ही मिलेगी।

मैं इस सदन के माध्यम से केंद्र सरकार से यह मांग करता हूं कि नालन्दा विश्वविद्यालय एवं इसके साथ-साथ 10 उत्खनन स्थलों, जिसमें बेसमक और तेलहाड़ा शामिल है, वे भी नालन्दा विश्वविद्यालय के इतिहास को ही दोहराएंगे। इसका जो उत्खनन शेष है, उसे यथाशीघ्र कराया जाए।